शिक्षक ही तय करते हैं भविष्य की दिशा

▶ राष्ट्रीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम का समापन

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 24 अप्रैल. शिक्षक ही विद्यार्थियों की क्षमता पहचानने का सबसे प्रभावी माध्यम हैं और प्रारंभिक स्तर पर सही मार्गदर्शन ही उनके जीवन की दिशा तय करता है. यह बात अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति विश्लेषण संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. राजीव दीक्षित ने कही.

जब वे पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे. कार्यक्रम में देशभर के 28 राज्यों और 8 केंद्रशासित प्रदेशों से

आए 200 से अधिक शिक्षकों और शिक्षा अधिकारियों ने भाग लिया. प्रो. फ्लोरेट जी डखार ने कौशल शिक्षा को भविष्य की जरूरत बताते हुए कहा कि स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार व्यावसायिक केंद्र विकसित किए जा रहे हैं, जिससे युवाओं को रोजगारोन्मुख शिक्षा मिल सके.

वहीं डॉ. दीपक पालीवाल ने बताया कि विभिन्न राज्यों के अनुभवों और चुनौतियों के आदान प्रदान से कौशल शिक्षा को और मजबूत बनाने की दिशा तय हुई है. कार्यक्रम के दूसरे दिन योग सत्र के साथ शुरुआत हुई, जिससे प्रतिभागियों में ऊर्जा और एकाग्रता का संचार हुआ. इसके बाद तकनीकी, सेवा और उत्पादन क्षेत्रों से जुड़ी गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को व्यवहारिक अनुभव दिया गया. सत्रों में माय करियर एडवाइजर ऐप और दस बस्तारहित दिवस जैसे विषयों पर गहन विमर्श हुआ. कक्षा 9 से 12 तक कौशल शिक्षा के एकीकरण और करियर मार्गदर्शन के व्यावहारिक पहलुओं पर विशेषज्ञों ने मार्गदर्शन दिया.

बीएचईएल भोपाल की 'क्वालिटी यात्रा'

भेल संवाददाता

भोपाल, 24 अप्रैल. क्षेत्रीय औद्योगिक गुणवत्ता को मजबूत बनाने की दिशा में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल), भोपाल ने 'क्वालिटी यात्रा' जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया.

यह कार्यक्रम भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) और राष्ट्रीय परीक्षण एवं अंशांकन प्रयोगशाला प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीएल) के सहयोग से अहिल्याबाई गेस्ट हाउस के सभागार में हुआ. कार्यक्रम का उद्देश्य विनिर्माण उद्योगों, परीक्षण प्रयोगशालाओं और शैक्षणिक संस्थानों के बीच गुणवत्ता संबंधी अंतर को कम करना था. विशेष रूप से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को एनएबीएल प्रत्यायन प्रक्रिया के प्रति जागरूक कर उनकी उत्पाद गुणवत्ता, प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ जी.पी. बघेल, महाप्रबंधक (गुणवत्ता), भेल भोपाल ने किया. उन्होंने कहा कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए मानकीकरण और प्रयोगशाला प्रत्यायन अत्यंत आवश्यक है. क्यूसीआई के सलाहकार जगत पटेल ने उद्योगों के समर्थन हेतु विकसित गुणवत्ता ढांचे की जानकारी दी, जबकि एनएबीएल के वरिष्ठ फैकल्टी शिशिर बसर ने प्रक्रियागत सुधार और औपचारिक प्रत्यायन के दीर्घकालिक लाभों पर प्रकाश डाला. भेल ने अपनी एनएबीएल मान्यता प्राप्त टेस्टिंग एवं कैलिब्रेशन प्रयोगशाला (टीएसडी) की उन्नत क्षमताओं का प्रदर्शन करते हुए घोषणा की कि ये सुविधाएं अब स्थानीय उद्योगों और एमएसएमई के लिए भी उपलब्ध रहेंगी.

एक नजर में

'पढ़ने का आनंद' से बच्चों ने जाना पुस्तकों का महत्व

भोपाल, 24 अप्रैल. पीएम श्री डेमोंस्ट्रेशन मल्टीपरपज स्कूल, भोपाल में 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस उत्साह के साथ मनाया गया. डिजिटल युग में बच्चों में घटती पढ़ने के प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए इस आयोजन का उद्देश्य विद्यार्थियों में पुस्तकों के प्रति रुचि विकसित करना था. कार्यक्रम की शुरुआत विशेष प्रार्थना सभा से हुई, जिसमें विद्यार्थियों ने विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला. साथ ही पंचतंत्र, जातक कथाएं, हितोपदेश और सिंहासन बत्तीसी जैसी भारतीय साहित्यिक कृतियों की जानकारी साझा की गई. इस अवसर पर 'पुस्तकें हमारी सच्ची मित्र हैं' विषय पर टीम आधारित कोलाज निर्माण प्रतियोगिता आयोजित की गई. प्राथमिक वर्ग के विद्यार्थियों के लिए 'पढ़ने का आनंद' गतिविधि भी आयोजित की गई, जिसमें रंगीन कहानी पुस्तकों के माध्यम से बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया गया.

लोकगायन चारबैत का दो दिनी आयोजन आज से

भोपाल, 24 अप्रैल. गोलघर शाहजहांनाबाद में 25 और 26 अप्रैल को अखिल भारतीय चारबैत समारोह आयोजित किया जाएगा. यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश उर्दू अकादमी द्वारा किया जा रहा है. दोनों दिन शाम 7.30 बजे से प्रस्तुतियां शुरू होंगी. इसमें उत्तर प्रदेश के चांदपुर और रामपुर की टीमें भाग लेंगी, वहीं भोपाल की तीन अनुभवी टीमें भी मंच पर प्रस्तुति देंगी. इस बार आयोजन में युवाओं को बढ़ावा देने के लिए दो नई टीमों को भी शामिल किया गया है. ये युवा कलाकार अपनी प्रस्तुति से इस पारंपरिक कला को नई पहचान देने का प्रयास करेंगे. चारबैत एक लोकगायन शैली है, जिसमें चार पंक्तियों के माध्यम से कहानी सुनाई जाती है. इसमें डफ की थाप, ताल और सामूहिक गायन का विशेष महत्व होता है. इस विधा में धार्मिक, सूफियाना, प्रेम, हास्य और सामाजिक विषयों को प्रस्तुत किया जाता है. करीब 400 साल पुरानी यह कला अब विलुप्ति के कगार पर है. देशभर में इसकी केवल 6 टीमें बची हैं, जिनमें से 3 भोपाल में सक्रिय हैं. ऐसे में यह आयोजन इस परंपरा को बचाए रखने की दिशा में एक अहम पहल माना जा रहा है.

केंद्रीय विद्यालय-2 में 31 वां वार्षिकोत्सव का आयोजन

भोपाल, 24 अप्रैल. (निज संवाददाता). पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, शिवाजी नगर का 31वां वार्षिक उत्सव शुक्रवार आयोजित किया गया. कार्यक्रम का आयोजन रवीन्द्र भवन के हंस ध्वनि सभागृह में हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में कलेक्टर एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष प्रियंक मिश्रा उपस्थित रहे. वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय विद्यालय संगठन,भोपाल संभाग की उपायुक्त शाहिदा परवीन शामिल हुईं. कार्यक्रम में विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों को साझा किया गया. सत्र 2025-26 में कक्षा 10 वीं का परिणाम शत-प्रतिशत रहा. साथ ही विद्यार्थियों ने जेईई एडवांस, चार्टर्ड एकाउंटेंट फाउंडेशन और इंटरमीडिएट परीक्षाओं के साथ विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय ओलंपियाड में उल्लेखनीय सफलता हासिल की. कार्यक्रम में प्राचार्य पवन कुमार बेदुये ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया. उन्होंने भविष्य में और बेहतर परिणाम लाने का संकल्प भी दोहराया. कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने सभी का मन मोह लिया.

कार्यशाला में कलाकारों ने अभिनय का महत्व समझा

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 24 अप्रैल. एनजीएल में अभिनय केवल संवाद बोलने की कला नहीं, बल्कि साथ मिलकर जीने का अनुभव बनकर उभरा.

द राइजिंग सोसायटी ऑफ आर्ट एंड कल्चर की कार्यशाला में शुक्रवार को विशेषज्ञों ने बताया कि कलाकार की असली ताकत उसकी प्रतिभा नहीं, बल्कि टीम के साथ उसका तालमेल होता है. कार्यशाला में बताया गया कि अभिनय एक सामूहिक प्रयोग है, जहां हर कलाकार दूसरे से जुड़कर ही अपने किरदार को जीवंत बना पाता है. जैसे ही कलाकार संकोच से बाहर निकलता है और समूह के साथ घुलता है, मंच पर एक नई सजीवता दिखाई देने लगती है. कार्यक्रम में प्रसिद्ध रंगकर्मी कॉन्स्टेंटिन स्टैनिस्लावस्की के विचारों को आधार बनाते हुए बमाया कि अभिनय का अर्थ केवल बोलना नहीं, बल्कि सामने वाले की हर प्रतिक्रिया को महसूस करना है. यह संवेदनशीलता सामूहिक अभ्यास से ही विकसित होती है. वहीं ग्रुप एक्टिविटी के दौरान कलाकारों ने इम्प्रोवाइजेशन के जरिए अपनी कल्पनाशीलता को विस्तार दिया.

भोज विश्वविद्यालय में 'साइबर सुरक्षा' पर व्याख्यान

नारी शक्ति वंदन पखवाड़ा : विशेषज्ञों ने दी साइबर सुरक्षा और डेटा प्राइवेसी की जानकारी

भोपाल, 24 अप्रैल. मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में आईआईसी एवं इनक्यूबेशन सेंटर द्वारा 'नारी शक्ति वंदन' पखवाड़ा के अंतर्गत साइबर सुरक्षा विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया. इसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों एवं विद्यार्थियों को डिजिटल युग में बढ़ते साइबर खतरों के प्रति जागरूक करना था.

सम्राट अशोक प्रौद्योगिकी संस्थान, विदिशा की विशेषज्ञ डॉ. शैला चुघ ने मुख्य वक्ता के रूप में बताया कि आज के समय में डेटा प्राइवेसी और डिजिटल सुरक्षा अत्यंत आवश्यक हो गई है. उन्होंने साइबर हाइजीन प्रैक्टिस जैसे- मजबूत पासवर्ड का उपयोग, टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन, नियमित ऐप अपडेट, सुरक्षित ब्राउज़िंग और डिवाइस प्रोटेक्शन के महत्व को समझाया. डॉ. चुघ ने सार्वजनिक वाई-फाई का उपयोग करते समय वीपीएन के प्रयोग की सलाह दी तथा किसी भी संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करने की चेतावनी दी. उन्होंने कहा कि साइबर हमलों से बचाव के लिए 'इमरजेंसी रिस्पॉन्स प्रोटोकॉल' जैसे-पासवर्ड बदलना, संबंधित प्राधिकरण को सूचित करना, डिवाइस स्कैन करना और अकाउंट मॉनिटर करना बेहद जरूरी है. कार्यक्रम संयोजक, विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया.

इस अवसर डॉ. प्रज्ञा शुक्ला, डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी, डॉ. शुचि मिश्रा, डॉ. सुनीता पमनानी, डॉ. सुनील गुलाटी, डॉ. भारती शर्मा उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन निधि रावल गौतम द्वारा किया गया.

करुणाधाम में शिवार्चना केन्द्र का किया भूमिपूजन

▶ शिवालय का शिखर होगा 150 फीट ऊंचा

भोपाल, 24 अप्रैल. करुणाधाम आश्रम में पीठाधीश्वर सुदेश शाण्डिल्य महाराज के निर्देशन में शिवालय शिवार्चना केन्द्र का भूमिपूजन पूजन-अर्चन किया गया. भव्य शिवालय का शिखर 150 फीट ऊंचा होगा.

गुरुदेव शांडिल्य महाराज ने बताया कि लगभग 55 हजार वर्गफुट क्षेत्र में बनने वाला शिवालय प्रमुख धार्मिक का केन्द्र आस्था, वास्तुकला और साज-सज्जा सहित आधुनिक सुविधाओं के अद्भुत संगम का केन्द्र बनने जा रहा है. इसकी अनुमानित लागत लगभग 22 करोड़ होगी, जिसे पूरा करने में करीब 4 वर्ष लगेंगे.

शिवालय का निर्माण राजस्थान के प्रसिद्ध धौलपुर पत्थर से किया जायेगा. इसकी मजबूती और भारतीय स्थापत्य शैली प्राचीनता को दर्शायेगी. शिवालय परिसर केवल धार्मिक स्थल ही नहीं, एक समग्र आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा. परिसर में हरियाली, फाउण्टेन और पार्क का निर्माण भी होगा, जिससे श्रद्धालुओं को शांत और सकारात्मक वातावरण की अनुभूति होगी.

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिये बेसमेंट पार्किंग की व्यवस्था भीड़ नियंत्रण में सहायक होगी. इसके अलावा परिसर में पुस्तकालय का निर्माण होगा, जिसमें धार्मिक ग्रंथों के साथ अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकों का संग्रहण किया जायेगा. मेडिटेशन के लिये विशेष ध्यान कक्ष भी बनाया जा रहा है. यह पूरी परिकल्पना धार्मिक आस्था को सशक्त बनाने के साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास का नया आयाम भी स्थापित करेगी.

श्रीमद् भागवत कथा के लिए कलश यात्रा

भोपाल, 24 अप्रैल. श्री नीलकंठेश्वर शिव दुर्गा मंदिर नीलकंठ कॉलोनी से शुक्रवार को संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के लिए कलश यात्रा निकाली गई, जो पुलिस कॉलोनी तक जाकर वापस मंदिर पर आकर समाप्त हुई. शनिवार से कथा प्रारंभ होगी, जो प्रतिदिन शाम 4 से 7 बजे तक चलेगी. 1 मई को कथा का समापन होगा. पं. शिव ओम शास्त्री कथा का वाचन करेंगे.

लेखक संघ की प्रादेशिक गीत गोष्ठी कल

भोपाल, 24 अप्रैल. मध्यप्रदेश लेखक संघ की प्रादेशिक गीत गोष्ठी 26 अप्रैल रविवार को दोपहर 2 बजे से दुष्यंत संग्रहालय शिवाजी नगर में होगी, जिसमें बुरहानपुर के वरिष्ठ कवि डॉ वीरेंद्र निर्झर मुख्य अतिथि, इंदौर इकाई के अध्यक्ष प्रभु त्रिवेदी सारस्वत अतिथि एवं डॉ राम वल्लभ आचार्य विशिष्ट अतिथि होंगे. प्रदेशाध्यक्ष राजेन्द्र गट्टानी कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे . गोष्ठी में सुनील त्रिपाठी निराला भिण्ड, सुभाष सिटोके हरदा, कैलाश गुसा मुरैना, आरती डोंगरे खरगोन,मनोज श्रीवास्तव मुंगावली एवं कौशल किशोर चतुर्वेदी, डॉ प्रभा मिश्रा, विद्या वीणा, संतोष सोनी एवं डॉ. प्रतिभा द्विवेदी भोपाल रचनापाठ करेंगे .

आदित्य ने झटके 6 विकेट रेलवे यूथ सेमीफाइनल में

खेल प्रतिनिधि

भोपाल, 24 अप्रैल. प्रथम शहीद भगत सिंह अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट में शुक्रवार को रेलवे यूथ टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ए.बी.सी.ए. को 7 विकेट से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना ली.

प्रथम शहीद भगत सिंह अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट

पहले बल्लेबाजी करते हुए ए.बी.सी.ए. की टीम 97 रन बनाकर ऑल आउट हो गई. टीम की ओर से अविनाश ने 35 रन और जीवेश ने 16 रन बनाए. रेलवे यूथ की ओर से आदित्य मौर्य ने बेहतरीन गेंदबाजी करते हुए 6 विकेट लेते हुए मैन ऑफ द मैच का खिताब हासिल किया.

लक्ष्य का पीछा करते हुए रेलवे यूथ की टीम से युवराज ने नाबाद 42 रन और अंकित ने 22 रन बनाए और अपनी टीम की सेमीफाइनल में जगह बनाई.

मैन ऑफ द मैच बनने पर आदित्य ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि वे पिछले 3 साल से क्रिकेट खेल रहे हैं. उन्होंने बताया कि उनके पिताजी ने उन्हें क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित किया और परिवार का पूरा सहयोग मिला.

कोच ने कहा कि पिछले 9-10 सालों में उन्होंने कई चुनौतियों का सामना किया है. शुरुआत में उनके पास न तो ज्यादा संसाधन थे और न ही अच्छी सुविधाएं. कई बार आर्थिक समस्याएं भी आईं और अन्य परेशानियों का सामना करना पड़ा. उन्होंने बताया कि मेहनत के दम पर उन्होंने अपनी अकादमी को तैयार किया. कुछ खिलाड़ी स्टेट लेवल पर खेल चुके हैं और अनिकेत वर्मा जैसे खिलाड़ी आईपीएल में भी खेल रहे हैं. इस मैच में रेलवे यूथ की जीत और आदित्य मौर्य का प्रदर्शन यह दिखाता है कि मेहनत और सही मार्गदर्शन से छोटे खिलाड़ी भी बड़ा मुकाम हासिल कर सकते हैं.

डॉ. मोहिनी बिंदा को शोध प्रस्तुति पुरस्कार

भोपाल, 24 अप्रैल. एम्स भोपाल के एनाटॉमी विभाग की सीनियर रेजिडेंट डॉ. मोहिनी बिंदा को राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ शोध प्रस्तुति के लिए सम्मानित किया गया. यह सम्मान उन्हें सोसाइटी ऑफ क्लिनिकल एनाटॉमिस्ट्स के राष्ट्रीय सम्मेलन में मिला. उनका शोध ऑस्टियोपोरोसिस से जुड़े हिप फ्रैक्चर मरीजों के आनुवंशिक कारणों पर आधारित है. यह अध्ययन भविष्य में हड्डियों की कमजोरी और फ्रैक्चर की समय रहते पहचान और रोकथाम में सहायक हो सकता है. इस शोध कार्य का मार्गदर्शन डॉ. प्रशांत ने किया.

वकीलों ने सदाबहार गाने गाकर बटोरीं तालियां

रवीन्द्र भवन के अंजनी सभागार में संगीत संध्या का आयोजन

निज संवाददाता

भोपाल,24 अप्रैल. शुक्रवार की शाम रवीन्द्र भवन के अंजनी सभागार में वकीलों और गायकों द्वारा संगीत संध्या का आयोजन किया गया.भोपाल म्यूजिकल ग्रुप (बीएमजी) के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम का नाम 'काहे को बुलाया मुझे बालमा' रखा गया. कार्यक्रम में लगभग 23 गायकों ने अपनी प्रस्तुतियां देकर श्रोताओं का मन मोह लिया.

कार्यक्रम के संयोजक एडवोकेट मेहबूब अंसारी, संरक्षक महेश मौर्य, सहसंयोजक धर्मेंद्र वाधवानी, अध्यक्ष सुरेश

मालवीय और सचिव विवेक आर्य ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य वकीलों की कला प्रतिभा को मंच देना है. संगीत संध्या में सुरेश मालवीय ने 'दर्दे दिल दर्दे जिगर', नीलेश खरे ने 'चाहिए थोड़ा प्यार', जयराज धौलपुरिया ने 'दुनिया में रहना है तो काम कर प्यारे' और राजू जाट ने 'पत्थर के सनम' प्रस्तुत किया.

सुखदेव प्रजापति ने गजल 'हुजूर आपका भी एहतराम करता चलूं' से वाहवाही लूटी . राकेश निंदाने, अनिल जैवार 'अन्नू', चाहत देव कौर, रूपेश साहू, रुबीना, आसिफ, जैस्मीन और विवेक आर्य सहित अन्य कलाकारों ने भी शानदार गीत पेश किए. फाल्गुनी पुरोहित, रविंद्र कृष्णन और धर्मेंद्र वाधवानी ने भी अपनी प्रस्तुतियां दीं.

कलचुरि कलार समाज का परिचय सम्मेलन 28 को

भोपाल, 24 अप्रैल. श्री सहस्त्रबाहु कलचुरी महासभा के तत्वावधान में 28 अप्रैल (मंगलवार) को शहर के लिंक रोड नंबर-3 स्थित कलचुरि भवन में कलचुरि कलार समाज का युवक-युवती परिचय सम्मेलन एवं महासभा का स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया जाएगा. कार्यक्रम सुबह 10 बजे से रात्रि 11 बजे तक चलेगा.

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 10 बजे भगवान सहस्त्रबाहु जी की पूजा-अर्चना के साथ होगी. महासभा के कार्यकारी प्रदेशाध्यक्ष डॉ. एल.एन. मालवीय ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल होंगे.

जज्बा | मायाराम सुरजन भवन में बैले वर्कशॉप में प्रशिक्षण दे रहीं श्रुतकीर्ति

68 की उम्र में भी युवाओं को सिखा रहीं बैले डांस

भोपाल 24 अप्रैल. मायाराम सुरजन स्मृति भवन परिसर में 24 अप्रैल से 10 मई तक बैले डांस वर्कशॉप का आयोजन किया जा रहा है. इस वर्कशॉप का उद्देश्य बच्चों और युवाओं को भारतीय बैले कला से जोड़ना और इसकी समझ बढ़ाना है. वर्कशॉप के पहले दिन कुछ बेसिक एक्सरसाइज और पोज़िशन्स की प्रैक्टिस कराई गयी.

वर्कशॉप की आयोजक और बैले कोरियोग्राफर 68 वर्षीय श्रुतिकीर्ति ने बताया कि आज की पीढ़ी बैले को ठीक से नहीं समझतीं. 'हम चाहते हैं कि बच्चे जानें कि बैले सिर्फ डांस नहीं है, इसमें मेहनत, म्यूजिक, एक्सप्रेशन और अनुशासन सब जरूरी है.

उन्होंने बताया कि वे 1984 से बैले से जुड़ी हैं और लंबे समय तक इस क्षेत्र में काम किया है. शुरुआत में उन्हें भी डर और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने इसे सीखा और अपनी पहचान बनाई, उन्होंने बताया इसमें समय, मेहनत और पैसे तीनों की जरूरत होती है. सरकारी ग्रांट मिलती है, लेकिन वह पर्याप्त नहीं होती. ऐसे में इस कला को जारी रखना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है. कई बच्चे शुरुआत में आते हैं, लेकिन मेहनत देखकर बीच में छोड़ देते है. उन्होंने कहा कि उनका मकसद है कि ज्यादा से ज्यादा बच्चे इस कला को समझें और इसे आगे बढ़ाएं, ताकि भारतीय बैले जैसी कला खत्म न हो.